तित्थयर

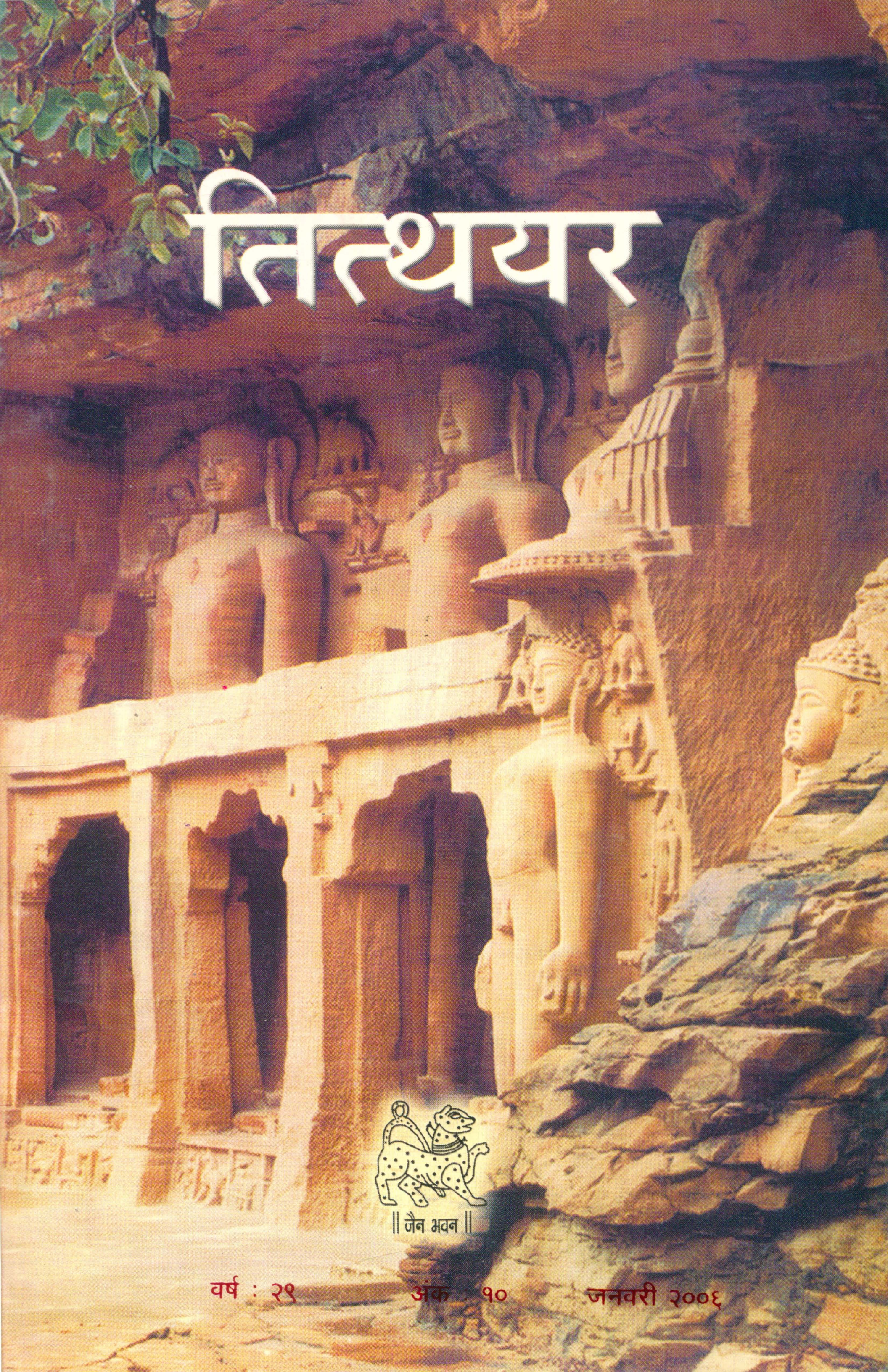

|| जैन भवन ||

वर्ष : २९ अंक : १० जनवरी २००६

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २९ | अंक - १०, जनवरी | २००६

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	जैन साहित्य में कृष्ण कथा	डॉ. महावीर कोटिया	५६१
२.	कला तीर्थ	रामजीत जैन	५७६
३.	वैर का विपाक		५८३

मूल्य - १०.०० रूपये

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

जैन साहित्य में कृष्ण कथा

डॉ. महावीर कोटिया

धर्म-प्रचार में लोक-प्रचलित कथाओं, आख्यानों, जनश्रुतियों का उपयोग प्रायः किया जाता रहा है। इसी प्रकार लोकविश्रुत महापुरुषों के जीवन-सन्दर्भों का उल्लेख भी इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा है। श्रीकृष्ण के जीवन-सन्दर्भों का जैन-परम्परागत साहित्य में ग्रहण भी इसी क्रम में हुआ है। कृष्ण-कथा का जो स्वरूप तीर्थंकर महावीर के समय में प्रचलित रहा होगा, उसका उन्होंने अपने धर्म-प्रचार में उपयोग किया होगा। अतः आगमिक कृतियों में कृष्ण-कथा के जो सन्दर्भ उपलब्ध हैं, बहुत सम्भव है वे ई. पू. छठी शताब्दी में अर्थात् तीर्थंकर महावीर के समय में इस रूप में प्रचलित रहे हों।

आगमिक साहित्य का जो रूप आज विद्यमान है वह ई. सन् पश्चात् ४५३-४६६ के मध्य बल्लभी में आयोजित एवं आचार्य देवर्द्धिगणी की अध्यक्षता में सम्पन्न श्रमण संघ द्वारा संकलित किया गया था, अतः स्वाभाविक ही, महावीर स्वामी के लगभग एक हजार वर्ष पश्चात् सम्पादित व संकलित कृतियों में कृष्ण से सन्दर्भित प्रसंग परिवर्धित व परिवर्द्धित हो गये होंगे। फिर भी श्रीकृष्ण के जीवनचरित्र का जो रूप जैन आगम साहित्य में उपलब्ध है, वह पाँचवीं शताब्दी ई. का तो निर्विवाद है।

जैनागमों में कृष्ण-कथा

आगमिक कृतियों में कृष्णचरित किसी क्रमबद्ध रूप में उपलब्ध नहीं है। कृष्ण से सम्बन्धित प्रसंग विविध कृतियों में यथा सन्दर्भ वर्णित है। इन कृतियों में ज्ञानधर्मकथा, अन्तकृद्दशा, प्रश्न-व्याकरण, उत्तराध्ययन तथा निरयावलिका मुख्य हैं। इनमें वर्णित प्रसंगों के आधार पर श्रीकृष्ण के सन्दर्भ में निम्नलिखित तथ्यों की जानकारी प्राप्त होती है—

१) सोरियपुर नगर में वसुदेव नाम के राजा थे। उनकी दो भार्याएँ—रोहिणी और देवकी थीं। इनसे उनके बलराम तथा केशव (कृष्ण) दो पुत्र थे।

२. वसुदेवादि दस भाई तथा दो बहिनें थीं। भाई थे—समुद्रविजय, अक्षोभ, स्तिमित, सागर, हिमवान, अचल, धरण, पूरण, अभिचन्द्र तथा वसुदेव। बहिनें थीं—कुन्ती और माद्री।

३. कृष्ण ने अपने जीवन-काल में अनेक वीरतापूर्ण कृत्य किए। इन कृत्यों में अरिष्टबैल का वध करना, यमलार्जुन को नष्ट करना, कालियनाग का दर्प-हरण करना, महाशकुनि और पूतना को मारना तथा चाणूर, कंस और जरासन्ध का वध करना सम्मिलित है।

४. कृष्ण द्वारिका के महान् महिमावान वासुदेव राजा थे। अनेक अधीनस्थ राजाओं, ऐश्वर्यवान नागरिकों सहित वैताढ्यगिरि (विन्ध्याचल) से सागर पर्यन्त दक्षिण भरत क्षेत्र उनके प्रभाव में था।

५. कृष्ण वासुदेव, बाइसवें जैन तीर्थंकर अर्हत अरिष्टनेमि के चचेरे भाई थे। अरिष्टनेमि के प्रति उनकी स्वाभाविक श्रद्धा थी। आगमिक कृतियों में अरिष्टनेमि के द्वारिका-आगमन का तथा कृष्ण का सदलबल उनकी धर्मसभा में उपस्थित होने का प्रसंग अनेक बार अनेक रूपों में वर्णित हुआ है। इन प्रसंगों में कृष्ण के परिवार-जन तथा द्वारिका के अन्य नागरिकों का अरिष्टनेमि के पास दीक्षा लेने का वर्णन भी है।

६. यादवों का विनाश मदिरापान से उन्मत्त हो परस्पर लड़ने से हुआ। द्वारिका नगरी अग्नि में भस्म हो गयी तथा कृष्ण का प्राणान्त जरत्कुमार के बाण लगने से कौशाम्बी वनप्रदेश में हुआ।

उक्त सन्दर्भों के आधार पर जैनागमों में कृष्णकथा का जो स्वरूप प्रकट होता है, वह इस प्रकार है—कृष्ण वसुदेव-देवकी के पुत्र थे। वसुदेवजी दस भाई थे तथा ये सोरियपुर के राजा थे। कृष्ण अत्यन्त वीर व साहसी पुरुष थे। बलराम उनके भाई थे। कृष्ण ने मथुरा के राजा कंस का वध किया। कालान्तर में उन्होंने अपने बाहुबल से द्वारिका में यादवों का शक्तिशाली राज्य स्थापित किया तथा समस्त दक्षिण भरतक्षेत्र में अपने प्रभाव का

विस्तार किया। वे राजा वासुदेव के रूप में अपने समकालीन राजाओं में सर्वश्रेष्ठ व पूजनीय मान्य हुए। उन्होंने मगध के शक्तिशाली राजा जरासन्ध का वध किया। रुक्मिणी उनकी प्रमुख रानी थी। प्रद्युम्न, साम्ब आदि उनके अनेक पुत्र थे। कृष्ण इनकी धर्म सभाओं में उपस्थित होनेवाले प्रमुख राजपुरुष थे। कृष्ण के परिवार-जन में से अनेको ने अरिष्टनेमि से वैराग्य की दीक्षा ग्रहण की। यादवों का विनाश सुरापान से हुआ। द्वारिका नगरी अग्नि में नष्ट हो गयी तथा कृष्ण का परलोक-गमन जरा नामक शिकारी के बाण लगने से हुआ।

जैन कृष्ण-कथा का विकसित रूप : हरिवंशपुराण की कृष्ण कथा

जैन साहित्य में कृष्णचरित का यही मूल स्वरूप है। प्राकृत भाषा में निबद्ध जैनागमिक कृतियों के इतस्ततः विखरे प्रसंगों के आधार पर हमने यह रूपरेखा प्रस्तुत की। ये कृतियाँ जैनों के श्वेताम्बर सम्प्रदाय में ही मान्य हैं। दिगम्बर साहित्य में कृष्णचरित की दृष्टि से जिनसेन हरिवंशपुराण (संस्कृत) महत्त्वपूर्ण कृति है। वस्तुतः संस्कृत पुराणों व चरित-ग्रन्थों में कृष्ण-चरित अपेक्षाकृत क्रमबद्ध व विस्तार से वर्णित है। इन कृतियों में वर्णित कृष्णचरित का मूल स्वरूप लगभग वही है जो ऊपर उद्धृत किया गया है। परन्तु कथा प्रसंगों को विस्तार दे दिया गया है। साथ ही, पूर्वापर सम्बन्ध बनाये रखने के लिए अन्य प्रसंग इधर-उधर से लेकर उन्हें अपने साँचे में ढाल लिया गया है। इस स्थिति के स्पष्टीकरण के लिए हम जिनसेन कृत हरिवंशपुराण में वर्णित कृष्णचरित की आधिकारिक कथावस्तु के प्रमुख सन्दर्भों का यहाँ उल्लेख कर रहे हैं। जिनसेन द्वारा वर्णित कृष्णचरित जैन साहित्य में अत्यधिक महत्त्व का स्थान रखता है। बाद की संस्कृत, अपभ्रंश व हिन्दी में रचित अनेक कृतियों के लिये प्रायः इसी पुराण की कथावस्तु आधार रही है—

हरिवंशपुराण में कृष्णकथा संक्षेप में इस प्रकार है—

हरिवंश में राजा यदु हुआ, जिसके वंशज यादव कहलाये। यदुवंशी राजा सौरी (शूर) ने सौरीपुर नगर बसाया तथा वहाँ अपना राज्य स्थापित किया। सौरी के दो पुत्र थे— अन्धक व भोजक। अन्धक को उत्तराधिकार में

सौरीपुर का प्रदेश मिला तथा भोजक को मथुरा का। अन्धक के दस पुत्र तथा दो पुत्रियाँ थीं। दसों पुत्र दशार्ह राजा के रूप में जाने जाते थे। ये सभी सौरीपुर में रहते थे। भोजक के उग्रसेन, महासेन, देवसेन (देवक) आदि पुत्र हुए। भोजक का बड़ा पुत्र उग्रसेन मथुरा का राजा बना।

अन्धक के दस पुत्रों में सबसे बड़े समुद्रविजय थे तथा सबसे छोटे वसुदेव। वसुदेव अत्यन्त सुन्दर थे। उन्होंने अनेक विवाह किये।

वसुदेव शस्त्रविद्या के भी महान् ज्ञाता थे। वे सौरीपुर में रहते समय अन्धक व भोजक कुलों के राजपुत्रों को शस्त्रविद्या की शिक्षा देते थे। इन राजपुत्रों में उग्रसेन का पुत्र कंस भी था। एक समय राजा वसुदेव कंस आदि अपने शिष्यों के साथ राजा जरासन्ध के राजगृह गये। उस समय जरासन्ध की ओर से यह घोषणा की गयी थी कि जो वीर पुरुष सिंहपुर के स्वामी राजा सिंहरथ को जीवित पकड़कर मेरे समक्ष उपस्थित करेगा, उसके साथ में अपनी पुत्री जीवद्यशा का विवाह करूँगा और उसका इच्छित प्रदेश भेंट में दूँगा। वसुदेव ने सिंहरथ को पकड़ने का निश्चिय किया।

सिंहरथ के साथ हुए भयंकर युद्ध में वसुदेव के रण कौशल एवं कंस के चातुर्य से सिंहरथ पराजित हुआ। उसे जीवित पकड़कर जरासन्ध के समक्ष प्रस्तुत किया गया। जरासन्ध ने प्रसन्न होकर पुत्री का विवाह वसुदेव से करना चाहा। परन्तु वसुदेव ने स्वयं यह विवाह न करके कंस के साथ जरासन्ध की पुत्री का विवाह करा दिया । इस विवाह से शक्तिशाली बने कंस ने बाद में अपने पिता राजा उग्रसेन को कैद में डालकर मथुरा का राज्य हथिया लिया।

कंस वसुदेव का अत्यधिक उपकार मानता था। अतः एक दिन वह बड़ी भक्तिपूर्वक वसुदेव को मथुरा लिवा लाया। उसने अपनी चचेरी बहिन देवकी (राजा देवक की पुत्री) का विवाह उनके साथ बड़े उत्साहपूर्वक सम्पन्न कराया। विवाह के पश्चात् कंस के बहुत आग्रह के कारण वसुदेव मथुरा में ही रहे आये।

एक दिन अतिमुक्तक मुनिराज से यह जानकर कि देवकी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र न केवल उसके पति (कंस) को अपितु पिता (जरासन्ध) के लिये भी

घातक होगा, जीवद्यशा ने यह समाचार कंस को दिया। तीक्ष्ण बुद्धि के धारक कंस ने शीघ्र ही उपाय सोचकर वसुदेव से यह वचन मांग लिया कि प्रसूति के समय देवकी का निवास मेरे ही घर में रहा करे।

तदनंतर देवकी ने क्रमशः तीन युगल-पुत्रों को जन्म दिया। प्रत्येक बार इन्द्र की आज्ञा से सुनैगम नामक देव जन्मते ही देवकी-पुत्रों को सुभद्रिल नगर के सेठ सुदृष्टि की अलका नामकी सेठानी के यहाँ पहुँचा आया तथा उसके प्रसव में उत्पन्न मृतक युगल-पुत्रों को देवकी के प्रसूतिगृह में रख आया। शंका युक्त कंस ने तीनों ही बार मृतक युगलों को शिला पर पछाड़ दिया। देवकी के छहों पुत्र–नृपदत्त, देवपाल, अनीकदत्त, अनीकपाल, शत्रुघ्न तथा जितशत्रु सेठानी अलका के यहाँ पलते हुए वृद्धि को प्राप्त हुए।

एक दिन रात्रि के अन्तिम प्रहर में देवकी ने निम्नलिखित सात पदार्थ स्वप्न में देखे– (१) उगता हुआ सूर्य, (२) पूर्ण चन्द्रमा, (३) दिग्गजों द्वारा अभिषिक्त लक्ष्मी, (४) आकाशतल से नीचे उतरता विमान, (५) ज्वालाओं से युक्त अग्नि, (६) ऊँचे आकाश में किरणों से युक्त देवध्वज और (७)अपने मुख में प्रवेश करता हुआ सिंह। स्वप्न का फल जानकर वासुदेव ने देवकी को बताया कि उसके गर्भ से एक ऐसे पुत्र का जन्म होगा जो महान् प्रतापी, स्वरूपवान, राज्याभिषेक से युक्त, अत्यन्त कान्तिवान, स्थिर प्रकृति और निर्भय तथा वीर होगा।

देवकी के इस सातवें गर्भ से कृष्म का जन्म हुआ। कृष्ण का जन्म सातवें मास में ही हो गया था। उत्पन्न होते ही वसुदेव उसे वृन्दावन ले गये तथा अपने विश्वासपात्र गोप नन्द की पत्नी यशोदा के पास उसे छोड़ आये तथा बदले में तभी उत्पन्न यशोदा की पुत्री को ले आये और उसे देवकी को दे दिया। कन्या को देखकर कंस का क्रोध यद्यपि दूर हो गया था फिर भी उसने हाथ से मसलकर उसकी नाक चपटी कर दी।

बालक कृष्ण सुखपूर्वक बढ़ने लगा। एक दिन कंस को किसी निमित्तज्ञानी से यह जानकारी मिली कि उसका शत्रु कहीं अन्यत्र बढ़ रहा है। उसने तीन दिन का उपवास कर अपने पूर्व भव के तप से सिद्ध हुई देवियों का आह्वान

किया और उन्हें अपने दुश्मन का पता लगाकर मारने का आदेश दिया। उसमें से एक देवी ने भयंकर पक्षी का, दूसरी ने पूतना धाय का, तीसरी ने शकट का, चौथी पाँचवी ने यमलार्जुन का तथा छठी ने बैल का रूप धारण कर कृष्ण को मारने का प्रयत्न किया। परन्तु वे सभी बालक कृष्ण द्वारा प्रताड़ित हुई। सातवीं देवी ने पाषाणमयी तीव्र वर्षा से कृष्ण को मारना चाहा। तब कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत के द्वारा समस्त गोकुल की रक्षा की।

तभी मथुरा में तीन पदार्थ प्रकट हुए– (१) सिंहवाहिनी नागशय्या, (२) अजितंजय धनुष तथा (३) पाञ्चजन्य शंख। कंस को ज्योतिषियों ने बताया कि जो कोई नागशय्या पर चढ़कर धनुष पर डोरी चढ़ा दे तथा पञ्चजन्य शंख को फूंक दे, वही उसका शत्रु है। कंस ने इस बात को गुप्त रखकर यह प्रचारित करवाया कि जो भी उक्त कार्य पूरा करेगा उसे कंस अपना महान् मित्र समझेगा तथा उसके लिए अलभ्य इष्ट वस्तु भेंट करेगा। कंस की इस घोषणा से अनेक नृपगण मथुरा आये परन्तु उसमें से कोई भी घोषित कार्य सम्पन्न नहीं कर पाया। एक दिन कंसपत्नी जीवद्यशा का भाई गोकुल आया और वहाँ कृष्ण का अद्भुत पराक्रम देख उसे साथ ले मथुरा पहुँचा। कृष्ण ने स्वाभाविक शय्या के समान ही नागशैय्या पर आरोहण किया, धनुष को प्रत्यञ्चा युक्त किया तथा शंख को फूँक दिया। कृष्ण का यह पराक्रम देख उनके बड़े भाई बलदेव को कंस से आशंका हो गयी। अतः उन्होंने बड़ी चतुरता से अपने पक्ष के अनेक लोगों को कृष्ण के साथ कर दिया।

अब कंस कृष्ण के विनाश का उपाय करने लगा। गोपों को आज्ञा हुई कि कालियनाग से युक्त ह्रद से कमल लाकर उपस्थित करें। कृष्ण ने कालियनाग का मर्दन किया तथा कमलदलों के साथ गोपों को कंस की सेवा में भेजा। कंस ने मल्लयुद्ध के लिए कृष्ण की अगुवाई में गोपों को आमन्त्रित किया। इस मल्लयुद्ध में अत्यधिक शौर्य का प्रदर्शन करते हुए कृष्ण ने चाणूर तथा बलराम ने मुष्टिक नामक मल्ल को पछाड़ दिया। इससे कुपित होकर जब कंस तलवार हाथ में लेकर कृष्ण की ओर लपका तो कृष्ण ने उसके हाथ से तलवार छीन ली तथा उसे भी पछाड़कर मार डाला। तदनन्तर यादवों के

परामर्श से कंस के पिता राजा उग्रसेन को मथुरा के राज्यसिंहासन पर आसीन किया गया।

कंस की पत्नी जीवद्यशा ने अपने पिता मगधराज जरासन्ध को, यादवों तथा कृष्ण द्वारा किये गये कंस-बध का अत्यधिक विलाप करते हुए विवरण दिया, जिससे क्रोधित होकर जरासन्ध ने अपने पुत्र कालयवन के साथ एक बड़ी सेना भेजकर यादवों को नष्ट करने का आदेश दिया। उसके मारे जाने पर अपने भाई अपराजित को भेजा। वह भी यादवों के हाथ युद्ध में मारा गया। इससे क्रोधित होकर जरासन्ध ने अपने पक्ष के अनेक राजाओं को एकत्र कर यादवों को दण्डित करने के लिये स्वयं कूच करने का निश्चय किया, तब अन्धकवंशी तथा भोजकवंशी सभी यादवों के प्रमुख पुरुषों ने मन्त्रणा कर शौरीपुर छोड़ देने का निश्चय किया। वहाँ से चलकर पश्चिमी समुद्र तट पर उन्होंने द्वारिका पुरी को अपनी राजधानी बनाया। कृष्ण के प्रताप से पश्चिम के अनेक राजा उनके वशवर्ती हो गये। कृष्ण वहाँ अनेक राजकंन्याओं से विवाह कर सुखपूर्वक रहने लगे। वहाँ रहते हुए उन्होंने नारद की सूचना पाकर कुण्डिनपुर के राजा भीष्मक की अत्यन्त रूपवती कन्या रुक्मिणी का हरण कर उससे विवाह किया। रुक्मिणी के लिए निश्चित किए गये वर राजा शिशुपाल का भी युद्धभूमि में हनन किया।

कृष्ण की रानियों में रुक्मिणी, सत्यभामा, जाम्बवती, लक्ष्मणा, सुसीमा, गौरी, पद्मावती, गान्धारी आदि थीं। इन रानियों से उनके अनेक पुत्र उत्पन्न हुए जिनमें प्रद्युम्न, साम्ब, भानु, सुभानु, भीम, महाभानु, महासेन, अकम्पन, उदधि, गौतम, प्रसेनजित्, भरत, शंख आदि प्रमुख थे। इस प्रकार कृष्ण द्वारिका में ऋद्धि-सिद्धि से युक्त होकर राज कर रहे थे। तभी एक दिन एक वणिक अपना खरीदा हुआ माल बेचने के उद्देश्य से बहुत-सी अमूल्य मणियाँ लेकर राजा जरासन्ध से मिला। उन मणियों को देखकर जरासन्ध ने उससे पूछा कि ये मणियाँ तुम कहाँ से लाये हो। वणिक ने उत्तर में जब द्वारकापुरी तथा वहाँ के महान प्रतापी राजा कृष्ण एवं यादवों का वर्णन किया तो जरासन्ध अत्यन्त कुपित होकर यादवों तथा कृष्ण को नष्ट करने

की योजना बनाने लगा। उसने अजितसेन नामक अपने दूत को द्वारिका भेजकर यादवों को अधीनता स्वीकार करने अथवा युद्धभूमि में सामना करने का संदेश भेजा। यादवों ने भी जरासन्ध का युद्ध का आमन्त्रण स्वीकार कर लिया और अपनी तायारी आरम्भ कर दी।

कुरुक्षेत्र में यादवों और जरासन्ध की सेना में बड़ा भीषण संग्राम हुआ। दोनों पक्षों से अनेक राजाओं ने अपनी सेनाओं सहित इस युद्ध में भाग लिया। युद्ध में कृष्ण द्वारा जरासन्ध का वध हुआ। इस अवसर पर सन्तुष्ट हुए देवों ने घोषणा की कि वसुदेव के पुत्र कृष्ण नौवें वासुदेव हैं और उन्होंने चक्रधारी होकर द्वेष रखने वाले प्रतिशत्रु जरासन्ध को उसी के चक्र से युद्ध में मार डाला है। तत्पश्चात् राजाओं ने अतिशय प्रसिद्ध कृष्ण तथा बलदेव को अर्ध भरतक्षेत्र के स्वामित्व पद पर अभिषिक्त किया। अपनी अनेक रानियों से सेवित कृष्ण द्वारकापुरी में राज्य भोग करते हुए सुखपूर्वक अनेक वर्षों तक जीवित रहे।

एक समय शाम्ब आदि यादव कुमारों ने अत्यधिक सुरापान से मत्त होकर तपस्वी पारासर के पुत्र ब्रह्मचारी द्वैपायन को निर्दयता पूर्वक मार डाला। इससे कुद्ध होकर उसने यादवगण सहित द्वारिका को जला देना का निदान किया। द्वारिका अग्नि में भस्म हो गयी शक्तिशाली यादव परस्पर युद्ध में लड़ मरे। इस विनाश से बचे कृष्ण तथा बलराम दुखी मन पाण्डवों के पास पाण्डु मथुरा की ओर चले। मार्ग में कौशाम्बी बन में कृष्ण को प्यास लगी। बलदेव पानी लेने गये और कृष्ण पीताम्बर ओढ़कर सो गये। इसी समय मृग की आशंका से जराकुमार द्वारा चलाये गये बाण से कृष्ण का प्राणान्त हो गया। पानी लेकर लौटने पर बलदेव ने मोह-वश कृष्ण को प्रगाढ़ निद्रा में सोया जाना। तब बलदेव उन्हें अपने कंधे पर लिये छह मास तक घूमते रहे। देवताओं के प्रतिबोध से उनका मोह दूर हुआ और उन्होंने कृष्ण का तुंगी गिरि पर दाह संस्कार किया। इस घटना से वे संसार से विरक्त हो गये। महान् तप के पश्चात् उन्होंने सिद्धत्व प्राप्त किया।

(ग) जैन कथा : अवान्तर प्रसंग

जैन कृष्ण कथा के कतिपय अवान्तर प्रसंग साहित्य वर्णन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण व लोकप्रिय रहे हैं। ये प्रसंग है—

१) अरिष्टनेमि-चरित

२) गजसुकुमाल-चरित

३) प्रद्युम्न-चरित

४) पाण्डव-चरित

इन प्रसंगों को आधार बनाकर विभिन्न भाषाओं में अनेक जैन साहित्यिक कृतियों का प्रणयन हुआ है। इन कृतियों में द्वारिका के शक्तिशाली राजा कृष्ण वासुदेव के वैभव व शक्ति-सामर्थ्य का वर्णन है। प्रसंग संक्षेप में निम्न प्रकार है—

१) **अरिष्टनेमि चरित :** कृष्ण के ताऊ महाराजा समुद्रविजय की महारानी शिवादेवी की कुक्षि से श्रावण शुक्ला पंचमी को अरिष्टनेमि का जन्म हुआ। उनका जन्म यादवों की राजधानी शौर्यपुर में हुआ। जिस समय यादवों ने शौर्यपुर तथा मथुरा से निष्क्रमण कर पश्चिमी समुद्र तट की ओर प्रयाण किया उस समय अरिष्टनेमि की बाल्यावस्था थी। यादवों के द्वारिका नगरी में बस जाने के बाद बालक अरिष्टनेमि वहाँ सभी परिवार-जन क़ो प्रमुदित करते हुए बड़े होने लगे। वे समस्त राजकुमारों में सर्वाधिक प्रतिभाशाली, ओजस्वी व अनुपम शक्ति सम्पन्न थे।

कृष्ण-जरासन्ध युद्ध के समय कुमार अरिष्टनेमि भी यादवसेना में उपस्थित थे। युद्ध के पश्चात् सभी यादवगण द्वारिकापुरी में आनन्दोपभोग करते हुए रहने लगे। माता-पिता, कृष्ण तथा सभी प्रमुख यादवों ने अरिष्टनेमि से विवाह करने का अनेक बार अनुरोध किया परन्तु वे बराबर उनके अनुरोध को टालते रहते थे। वे जन्मना विरक्त प्रकृति के थे। कृष्ण ने अपनी रानियों के सहयोग से उन्हें बड़ी कठिनाई से विवाह के लिए तैयार किया। उग्रसेन की पुत्री राजीमती से अरिष्टनेमि का विवाह सम्बन्ध निश्चित किया गया। विवाह

के लिए जाते समय बारात के भोज के लिए एकत्रित अनेक पशु-पक्षियों को बाड़े में बन्द देखकर तथा यह जानकर कि बारात में आये लोगों के लिए इनका वध किया जायेगा, नेमिकुमार का जन्मना विरक्त भाव और अधिक दृढ़ हो गया। उन्होंने वहीं वैवाहिक वस्त्राभूषणों को त्यागकर वैराग्य का मार्ग अंगीकार करने का निश्चय कर लिया। मंगल महोत्सव में आयी इस बाधा ने वर तथा वधू—दोनों पक्षों के लोगों को विकल कर दिया। नेमिकुमार अपने निश्चय पर दृढ़ रहे। वे वहाँ से तुरन्त लौट चले। उन्होंने प्रव्रज्या ग्रहण की तथा कठोर साधना के बाद कैवल्य प्राप्त किया। अपने द्वारा प्राप्त ज्ञान के आलोक से संसार को आलोकित करने के लिए अर्हत् अरिष्टनेमि विहार करने लगे। अनेक लोगों ने उनके पास दीक्षा ली। राजीमती ने भी उन्हीं के पथ का अनुकरण किया। उनका विहार द्वारिका में प्रायः होता रहता था। इस अवसर पर कृष्ण सदल-बल उनकी उपदेश सभाओं में उपस्थित रहा करते थे। कृष्ण की रानियों, पुत्रों, अन्य परिवारिक व्यक्तियों तथा द्वारिका के अनेक नर-नारियों ने इन अवसरों पर अर्हत् अरिष्टनेमि के प्रबोधन से वैराग्य का जीवन अंगीकार किया। अनेक वर्षों तक संसार के लोगों को मुक्ति का मार्ग दिखानेवाले अर्हत् अरिष्टनेमि ने आषाढ़ शुक्ला अष्टमी को मुक्ति प्राप्त की।

२) गजसुकुमाल-चरित : भद्दिलपुर की सुलसा गाथापत्नी के, समान स्वरूप वाले छह पुत्र अर्हत् अरिष्टनेमि के पास दीक्षित हुए। अरिष्टनेमि के द्वारिका विहार से समय ये छह भाई दो-दो के संघ में तीन बार कृष्ण की माता देवकी के महल में भिक्षार्थ पहुँचे। इनको देखकर देवकी को अपने कृष्ण से पूर्व उत्पन्न छहों पुत्रों की बात याद हो आयी। वे भी आज ऐसे ही होते—इस विचार ने उसे दुखी कर दिया। बाद में यह बात जानकर कि ये वास्तव में उसी से उत्पन्न पुत्र हैं जिन्हें कि जन्म लेते ही सुलसा के पुत्रों से बदल दिया गया था, देवकी अत्यन्त करुणार्द्र हो गयी। वह चिन्तामग्न हो गयी कि सात पुत्रों की जननी होकर भी मैं एक का भी बालसुख न देख सकी। इस प्रकार के विचारों से वह उदास रहने लगी। कृष्ण ने माता के मनोरथ को पूर्ण करने के लिए तप किया तथा हरिणैगमेषी देव से अपने

लिए लघु भ्राता की याचना की। यथा समय देवकी ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम गजसुकुमाल रखा गया।

गजसुकुमाल जब युवावस्था को प्राप्त हुए तो कृष्ण वासुदेव ने उनका विवाह सम्बन्ध द्वारिका के सोमिल नामक ब्राह्मण की रूपवती कन्या सोमा से निश्चित कर दिया। उन्हीं दिनों अर्हत् अरिष्टनेमि का द्वारिका आगमन हुआ। उनके उपदेश श्रवण कर गजसुकुमाल ने प्रव्रजित होने का निर्णय कर लिया। देवकी, कृष्ण तथा अन्य परिवार-जन ने उन्हें अनेक तरह समझाने का प्रयत्न किया परन्तु वे अपने निश्चय पर दृढ़ रहे। उन्होंने अर्हत् अरिष्टनेमि से दीक्षा ग्रहण की और उनकी आज्ञा लेकर महाकाल श्मशान में एक रात्रि के लिए ध्यानरूढ़ हो गये।

सन्ध्या वेला में यज्ञ की समिधा, कुश, पत्ते आदि लेकर लौटते हुए सोमिल की दृष्टि गजसुकुमाल पर पड़ी। उसे मुण्डित हुए देखकर वह क्रोधित हुआ। इसने मेरी निर्दोष पुत्री के जीवन से खिलवाड़ किया है, मैं भी इससे बदला लूँगा। यह सोचकर उसने मुनिराज के मस्तक पर गीली मिट्टी की पाल बाँधकर पास की एक जलती चिता में से लाल-लाल जलते हुए अंगारे उनके मस्तक पर रख दिए। मुनि ने शान्त मन व निर्विकार भाव से उस भयंकर वेदना को सहन करते हुए सिद्धत्व प्राप्त किया।

३. प्रद्युम्न-चरित : प्रद्युम्न कुमार कृष्ण की रानी रुक्मिणी से उत्पन्न पुत्र था। जन्म की छठी रात्रि में धूमकेतु नामक राक्षस ने बालक प्रद्युम्न का अपहरण किया और उसे एक शिला के नीचे दबा कर भाग गया। उसी कालसंवर नामक विद्याधर ने बालक प्रद्युम्न को उठा लिया। उसकी पत्नी कंचनमाला ने उसका पालन-पोषण किया। युवा होने पर प्रद्युम्न अतिशय रूपवान, बलशाली व प्रतिभावान बना। उसने कालसंवर के शत्रु सिंहरथ को पराजित किया। कालसंवर के अन्य पुत्र उससे जलने लगे व उसे मारने का उपाय करने लगे। परन्तु प्रद्युम्न ने सभी विपत्तियों का निर्भय होकर सामना किया तथा अनेक विद्याएँ सीख लीं। उसने कंचनमाला से भी तीन विद्याएँ ग्रहण कर लीं। कंचनमाला उसमें अनुरक्त हो गयी। परन्तु उसकी कामचेष्टाओं का प्रद्युम्न

पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उलटा उसने उसे समझाने का प्रयत्न किया। इससे कुपित हो कंचनमाला ने कालसंवर को प्रद्युम्न के विरुद्ध उकसाया। कालसंवर और प्रद्युम्न के बीच भयंकर युद्ध हुआ। तभी नारद ने आकर बीच बचाव किया। वास्तविक तथ्य जानकर प्रद्युम्न द्वारिका लौटे।

द्वारिका आकर अपनी विमाता सत्यभामा व उसके पुत्र भानुकुमार को अपनी विद्याओं से परेशान किया। ब्रह्मचारी का वेश बनाकर अपनी माता रुक्मिणी के पास गये । मायामयी रुक्मिणी बनाकर उसे कृष्ण की सभा के आगे से खींचते हुए ले जाकर कृष्ण को ललकारा। कृष्ण और प्रद्युम्न में युद्ध हुआ। नारद ने आकर प्रद्युम्न का परिचय दिया। सभी बड़े प्रसन्न हुए। नगर में उत्सव मनाया गया। प्रद्युम्न ने लम्बी अवधि तक राजसुख भोगकर अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ली तथा निर्वाण प्राप्त किया।

४. पाण्डव-चरित : पाण्डु हस्तिनापुर के राजा था। कृष्ण वासुदेव की बुआओं— कुन्ती तथा माद्री का विवाह राजा पाण्डु के साथ हुआ था। राजा पाण्डु के पाँच पुत्र थे जो कि पाण्डव कहलाये। इनके नाम थे क्रमशः युधिष्ठर, भीम, अर्जुन, नकुल व सहदेव।

एक समय कांपिल्यपुर नगर के राजा द्रुपद ने अपनी सुन्दर पुत्री दौपदी के लिए स्वयंवर का आयोजन किया। इस स्वयंवर के लिए जो निमन्त्रण भेजे गये थे उनमें सर्वप्रथम निमन्त्रण कृष्ण वासुदेव के पास द्वारिका भेजा गया। अन्य जिन राजाओं को निमन्त्रण किया गया उनमें प्रमुख थे– हस्तिनापुर के राजा पाण्डु, अंगदेश के अधिपति राजा कर्ण, नन्दिदेश के अधिपति शैल्यराज, शुक्तिमती नगरी में दमघोष के पुत्र राजा सहदेव, कौडिल्य नगर में भीष्मक के पुत्र राजा रुक्मि, मथुरा के राजा धर तथा विराट नगर के राजा कीचक। इन सभी राजाओं में कृष्ण वासुदेव प्रमुख थे।

स्वयंवर में दौपदी ने पाण्डु-पुत्रों का वरण किया। कालान्तर में एक बार नारद द्रौपदी के राजमहलों में गये। उस समय द्रौपदी ने नारद को कलहप्रिय जानते हुए उनके प्रति सम्मान प्रकट नहीं किया। इससे नारद ने अपने को अपमानित समझा। उन्होंने द्रौपदी के रूप सौन्दर्य का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन

किया, और उस विलासी राजा को द्रौपदी का सुसुप्त अवस्था में राजमहलों से अपहरण करने को प्रेरित किया। नारद की सूचना के अनुसार पद्मनाभ ने द्रौपदी का सुसुप्त अवस्था में अपहरण करवा लिया। राजा पाण्डु अनेक प्रयत्नों के बाद भी उसका पता नहीं लगा सके। तब उन्होंने कुन्ती को कृष्ण वासुदेव के पास द्वारिका भेजा। कृष्ण वासुदेव ने भी द्रौपदी का पता लगवाने का बहुत प्रयत्न किया। अन्ततः नारद की ही सूचना के आधार पर उन्हें द्रौपदी की जानकारी मिली।

कृष्ण वासुदेव पाण्डवों के साथ अमरकंका गये। उन्होंने युद्ध में राजा पद्मनाभ को पराजित किया तथा द्रौपदी को लौटाकर लाये। मार्ग में गंगा को पार करते समय पाण्डुओं ने नौका को इसलिए छिपा दिया ताकि नदी पार करने में वे कृष्ण के पराक्रम व सामर्थ्य का परीक्षण कर सकें। पाण्डवों के इस कृत्य से कृष्ण कुपित हो गये। उन्होंने लौह-मुग्दर से उनके रथों को चूर्णकर दिया तथा देश निर्वासन की आज्ञा दी। दुःखी पाण्डव हस्तिनापुर पहुँचे। यह समाचार जानकर राजा पाण्डु ने कुन्ती को कृष्ण वासुदेव के पास द्वारिका भेजा। कृष्ण की आज्ञा से पाण्डुओं ने दक्षिणी समुद्रतट पर पाण्डु मथुरा नाम की नगरी बसाया तथा शेष जीवन वहीं निवास किया। द्वारिका-विनाश तथा कृष्ण की कालप्राप्ति समाचार सुनकर पाण्डवों को संसार से विरक्त हो गयी। उन्होंने नेमिनाथ के पास वैराग्य की दीक्षा ली और आजीव तप किया।

आगमों में पाण्डवों से सम्बन्धित इतना ही वृत्तान्त उपलब्ध है। परन्तु ई. सन् की १३वीं १४वीं शती के पश्चात् कतिपय जैन लेखकों ने महाभारत में उपलब्ध पाण्डवों की कथा तथा पाण्डवों से सम्बन्धित जैन परम्परागत प्रसंगों को मिलाकर पाण्डवचरित प्रस्तुत किया। इस प्रकार के ग्रन्थ हैं– पाण्डवपुराण (शुभचन्द संस्कृत), पाण्डवपुराण (यशकीर्ति-अपभ्रंश), पंचपाण्डव चरित, रास-शालिभद्र, (आदिकालिक हिन्दी), पाण्डवपुराण (बुलाकीदास, हिन्दी) आदि।

(घ) जैन कृष्णकथा : निष्कर्ष

जैन कृष्णकथा के कतिपय निष्कर्ष निम्न प्रकार हैं—

१) वृष्णि वंशी यादव, जिनमें कृष्ण का जन्म हुआ, मूलतः सोरियपुर–

मथुरा के भू भाग (पश्चिमी उत्तर प्रदेश के आगरा-मथुरा जिलों का भूभाग) पर निवास करते थे। कृष्ण के पिता वसुदेव यादवों के अन्धकवृष्णि परिवार से थे तथा माता देवकी यादवों के भोजकवृष्णि परिवार की थीं। देवकी मथुरा के राजा कंस की चचेरी बहिन थीं।

२) सोरियपुर में अन्धकवृष्णि परिवार के दसों भाई दशार्ह राजा की पदवी से विभूषित थे। इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि दसों मिलकर शासन कार्य चलाते थे। अतः एक प्रकार का परिवारिक गणतन्त्र सोरियपुर में प्रचलित था। दूसरी ओर मथुरा के भोजकवृष्णियों में उग्रसेन के पुत्र कंस ने अपना निरंकश शासन स्थापित कर लिया था जिसकी प्रेरणा सम्भवतः उसे अपने श्वसुर व राजगृह के निरंकुश अधिपति जरासन्ध से मिली होगी।

३) कृष्ण द्वारा कंस के वध से जरासन्ध व वृष्णिवंशी यादवों में परस्पर संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई। जरासन्ध की शक्ति के सामने अपने को असमर्थ पाकर इन यादवों ने अपना परिवारिक भू-भाग छोड़कर पश्चिम की ओर पलायन किया और अन्त में समुद्र किनारे पहुँचकर द्वारिका में निवास किया।

४) द्वारिका में रहते हुए कृष्ण के नेतृत्व में यादवों ने महान् शक्ति व वैभव अर्जित किया। जरासन्ध को जब यादवों तथा कृष्ण की जानकारी मिली तो उसने उन्हें अपना आधिपत्य स्वीकार करने अथवा युद्धभूमि में सामना करने का सन्देश भेजा। अन्ततः कृष्ण के नेतृत्व में यादवों और जरासन्ध की सेना के बीच संघर्ष हुआ। कृष्ण ने जरासन्ध को मार डाला। यादव विजयी हुए तथा कृष्ण भारतभूमि के राजपुरुषों में अग्रणी रूप में प्रतिष्ठित हुए। जैन-कथा के अनुसार इस युद्ध के फलस्वरूप कृष्ण आधे भरतक्षेत्र के अधिपति अभिषिक्त हुए और उन्हें राजा वासुदेव के रूप में मान्यता मिली। वासुदेव के रूप में कृष्ण की वीरता व शक्ति-सम्पन्नता को जैन साहित्य में महत्ता मिली है। एक प्रकार से कृष्ण वासुदेव के वीरत्व की पूजा को जैन साहित्य ने मान्यता दी है तथा उन्हें अपने पौराणिक चरित नायकों में सम्मिलित किया है।

५) कृष्ण वासुदेव का उत्तरकालीन जीवन अरिष्टनेमि के त्याग से प्रभावित रहा। अरिष्टनेमि उन्हीं के कुल के राजकुमार थे। महान् त्याग और तप के पश्चात् ज्ञान प्राप्त करके वे अर्हत् प्रसिद्ध हुए। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर अनेक यदुवंशी स्त्री-पुरुषों एवं द्वारिका के अन्य निवासियों ने सन्यास धर्म अंगीकृत किया। स्वयं कृष्ण उनकी धर्म चर्चा में रुचिपूर्वक भाग लेते थे। इस प्रकार जैन कथानायक कृष्ण वासुदेव तीर्थंकर अरिष्टनेमि के प्रति श्रद्धावनत बताये गये हैं।

६) जैन परम्परा के कृष्णचरित में कृष्ण के गोपीजनप्रिय एवं राधाप्रिय के सन्दर्भों का सर्वथा अभाव है। राधा का नाम भी जैन परम्परागत कृष्ण चरित वर्णन में कहीं देखने को नहीं मिलता। जैन कथानायक कृष्ण में शृंगारी नायक के स्वरूप का अभाव है। अपेक्षाकृत उनके वीर श्रेष्ठ शलाकापुरुष वासुदेव के स्वरूप का ही सर्वत्र वर्णन हुआ है।

७) जैनागमों तथा प्राचीन जैन पुराण-ग्रन्थों में कृष्ण वासुदेव का पाण्डवों से कुपित होकर उन्हें दक्षिणी समुद्र तट पर पाण्डु मथुरा नगरी बसाने का तथा वहाँ निवास करने के आदेश का भी प्रसांगिक वर्णन है। कौरव-पाण्डव के मध्य हुए महाभारत युद्ध के सम्बन्ध में भी ये कृतियाँ मौन हैं। गीता के उपदेश के बारे में भी कोई जानकारी नहीं मिलती।

८) जैन कथा में यादवों तथा द्वारिका का विनाश, जरा नामक शिकारी के बाण लगने से कृष्ण वासुदेव का परमधाम-गमन किंचित् हेर-फेर के साथ लगभग उसी रूप में वर्णित है जिस प्रकार कि महाभारत कथा तथा बौद्ध-घट जातक की कथा में वर्णित है।

तीनों परम्पराओं की कथा में कृष्ण के परमधाम गमन के प्रसंग के अतिरिक्त कृष्ण द्वारा कंस का वध, कृष्ण का अपर नाम वासुदेव होना तथा कृष्ण की अद्वितीय वीरता, पराक्रम व शक्तिसामर्थ्य का प्रसंग वर्णन लगभग एक समान है। तीनों कथाओं के ये समान तथ्य कृष्णचरित की ऐतिहासिकता के सन्धान की दृष्टि से ध्यान देने योग्य हैं। जैन कथा के समान बौद्ध कथा में भी महाभारत युद्ध के प्रसंग का तथा कृष्ण के गोपी-प्रेम के सन्दर्भों का अभाव है।

कला तीर्थ

रामजीत जैन

गुफा मन्दिरों का इतिहास जैनों से ही प्रारम्भ होता है और उन्हीं पर आकर समाप्त हो जाता है। ग्वालियर किले के गुफा मन्दिरों के उत्तर-काल में शायद अन्यत्र कहीं कोई गुफा-मन्दिर खोदा नहीं गया। जहाँ तक शिल्प का क्षेत्र है जैन गुफाओं का अपना विशेष स्थान है। अजन्ता की गुफाओं का महत्व उनके चित्रों के कारण हैं, उदयगिरि और खण्डगिरि की गुफाएं को शिल्प कला के इतिहास में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है और इन्हीं से दो मंजिली गुफाओं का इतिहास प्रारंभ होता है।

इस गढ़ में जितनी मूर्तियां बनी हैं, उनका निर्माण डूंगरसिंह कौर कीर्तिसिंह के शासन काल के ५५ वर्षों में हो पाया। महाराजा डूंगरसिंह के काल में पहाड़ की ऊबड़-खाबड़, आड़ी-तिरछी शिलाओं और चट्टानों को छैनी हथौड़ी की सहायता से साफ और चिकना बनाने का उपक्रम चलता रहा। फिर कलाकारों ने चट्टानों के कठोर हृदय को भेदकर (उनके भीतर से) सौम्यता, शान्ति और बीतरागता को प्रतिमाओं के मुख पर अंकित करने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने सम्पूर्ण दुर्ग को जैन प्रतिमाओं का भव्य मन्दिर बना दिया। प्रतिमाओं के विशाल स्वरूप में भी कलाकार की छैनी और हथौड़ा दिव्य भावनाओं को अभिव्यंजित करने में नहीं चूकी है। यह कलाकारों के नैपुण्य का द्योतक है।

भगवान अजितनाथ की सफेद संगमरमर की पद्मासन मूर्ति जिसको महाराजा डूंगरसिंह ने ग्वालियर दुर्ग में प्रस्थापित किया था, उसे सेठ लक्ष्मीचन्द ने ग्वालियर से ले जाकर श्री दि. जैन तीर्थ क्षेत्र चौरासी, मथुरा में पधराई। ऐसा प्रतीत होता है कि महाराजा डूंगरसिंह तोमर ने किसी विशाल मंदिर का निर्माण ग्वालियर दुर्ग में कराकर यह मूर्ति प्रस्थापित की थी परन्तु आगे चलकर किसी समय मुगलों के द्वारा नष्ट किये जाने के भय से भक्तों द्वारा

यह मूर्ति दुर्ग में से हटा दी गई। इस मूर्ति पर डूंगरसिंह महाराजा द्वारा स्थापित किये जाने का लेख है।

गूजरी महल में पुरातत्व संग्रहालय : ग्वालियर दुर्ग में स्थित गूजरी महल में एक केन्द्रीय पुरातत्व संग्रहालय है। इसमें जैन प्रतिमाएं एवं शिला लेख भी हैं। संग्रहालय में जैन प्रतिमाओं का विवरण इस प्रकार है—

इस संग्रहालय की मूर्तियां तीन स्थानों— १. प्राचीन ग्वालियर, २. पद्मावती और ३. भेलसा (विदिशा) से संग्रह की गई है। ग्वालियर से संग्रह की गई मूर्तियाँ प्रायः तोमर वंशी शासन काल (१५वीं १६वीं शताब्दी) की हैं, परन्तु कुछ ११-१२वीं शताब्दी की भी है। एक पद्मासन मूर्ति के लेखानुसार वह महाराजाधिराज मानसिंह के शासन काल में विक्रम संवत १५५२ में प्रतिष्ठित की गई थी। दूसरी मूर्ति पार्श्वनाथ की विक्रम संवत १५७६ की है। पार्श्वनाथ की एक अन्य मूर्ति ११-१२वीं शताब्दी की है। इनके अतिरिक्त नेमिनाथ, धर्मनाथ और चन्द्रप्रभ की मूर्तियां हैं एवं चौमुखी मूर्तियां भगवान् ऋषभनाथ, अजितनाथ, महावीर और पार्श्वनाथ की हैं।

भेलसा (विदिशा) से प्राप्त एक चतुर्मुखी प्रतिमा है उसमें भी मूर्तियों का क्रम उपरोक्तानुसार है। वहीं से प्राप्त ऋषभदेव की एक मूर्ति अपने अद्‌भुत केश विन्यास के कारण विशेष उल्लेखनीय है।

पद्मावती (पवाया) जैन मूर्तियों में आदिनाथ, धर्मनाथ, पद्‌मप्रभ, अजितनाथ और पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ हैं। ये मूर्तियाँ पद्मावती के पश्चिम में स्थित पहाड़ी से लायी गयी थीं ये सब मूर्तियाँ १२ से १४वीं विक्रम शताब्दी की हैं।

उपरोक्त सब मूर्तियां गूजरी महल के फाटक में घुसते ही गैलरी में है तथा गैलरी नं. २० जैन कक्ष में सुरक्षित हैं मूर्तियों का क्रमिक विवरण इस प्रकार है :-

१. पार्श्वनाथ मूर्ति का सिर।
२. पद्मासन प्रतिमा, अवगाहना ढाई फुट ऊपर दोनों सिरों पर दो पद्मासन अर्हन्त प्रतिमाएँ हैं। उनके नीचे दो देवियां वाद्य यंत्र लिये हुए हैं उनसे नीचे चमरवाहाक है।
३. साढ़े चार फुट शिलाफलक पर दो खड्‌गासन तीर्थंकर मूर्तियां हैं। सिर के

ऊपर छत्र है। कोनों पर आकाशचारी गन्धर्व हैं। मूर्ति के हाथों के पास दोनों ओर दो-दो चमरेन्द्र खड़े है। पाषाण का वर्ण कुछ हल्का पीला है।

४. दूसरे बरामदे में— सहस्त्र कूट चैत्यालय।

५. सर्वतोभद्रिका प्रतिमाएँ पद्मासन मुद्रा में, अवगाहना चार फुट।

६. सर्वतोभद्रिका प्रतिमाएँ खड्गासन मुद्रा में। चारों कोनों पर चमरवाहक।

७. पूर्वोक्त प्रतिमा जैसी हैं। चमरवाहक नहीं है।

जैन कक्ष नं. २० में मूर्तियों का क्रम इस प्रकार है :—

१. सवा दो फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा। गर्दन से ऊपर का भाग नहीं।

२. सर्वतोभद्रिका।

३. पद्मासन मुद्रा में सवा दो फुट उन्नत प्रतिमा पुष्पदन्त तीर्थंकर की है। परिकर में ऊपर कोनों पर गजारुढ़ इन्द्र, नभचारी देव और मध्य में चमरेन्द्र।

४. तीर्थंकर मूर्ति का केवल पीठासन भाग है, शेष खण्डित है। मध्य में वोधिवृक्ष बना हुआ है। उसके दोनों ओर खड़े हुए भक्त उसकी पूजा कर रहे हैं। उसके ऊपर दो पद्मासन तीर्थंकर मूर्तियाँ हैं। उनके दोनों ओर यक्ष और यक्षिणी खड़े हैं। मूर्ति लेख के अनुसार इस मूर्ति की प्रतिष्ठा संवत् १५५२ ज्येष्ठ सुदी २ सोमवार को सम्पन्न हुई।

५. खड्गासन मुद्रा में ७ फुट उन्नत तीर्थंकर प्रतिमा। परिकर में आकाशचारी गन्धर्व और चमरेन्द्र।

६. ढ़ाई फुट ऊँची पद्मासन मूर्ति। सिर के पीछे प्रभालय है।

७. पंचवालयति की मूर्ति। मध्य में खड्गासन पार्श्वनाथ है। ऊपर दो पद्मासन तथा नीचे दो खड्गासन मूर्तियां हैं। उनके दोनों ओर चमरवाहक हैं।

८. एक खण्डित मूर्ति केवल पद्मासन (पथोली) का भाग अवशिष्ठ है। मूर्ति लेख के अनुसार संवत् १४९२ में प्रतिष्छित ।

९. एक भव्य तीर्थंकर प्रतिमा। पद्मासन मुद्रा में अवगाहना साढ़े चार फुट। छत्र और भामण्डल कलापूर्ण हैं। दोनों ओर दो खड्गासन मूर्तियाँ हैं, किन्तु खण्डित हैं।

१०. सात फुट उन्नत, पद्मासन मुद्रा में तीर्थंकर मूर्ति छत्रत्रयी है। ऊपर दोनों कोनों पर माला लिए हुए देवी-देवियाँ बनी हुई हैं। दो खड्गासन तथा दोनों ओर दो-दो युगल मूर्तियाँ पद्मासन मुद्रा में। नृत्य मुद्रा में चमरेन्द्र खड़े हैं। दोनों कोनों पर यक्ष यक्षिणी बने हैं। दो सिंह बने हैं। शेष भाग खण्डित हैं।

११. भगवान पार्श्वनाथ की पांच फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा। सिर पर फणावली, उसके ऊपर छत्र और भामण्डल सुशोभित हैं। ऊपर पार्श्व में दोनों ओर गज बने हुए हैं। नीचे दोनों ओर दो दो खड्गासन मूर्तियाँ है। अलंकरण में हिरण ओर देवियां उत्कीर्ण हैं।

१२. पांच फुट की खड्गासन तीर्थंकर प्रतिमा उसके सिर के ऊपर छत्रत्रयी और पीछे भामण्डल सुशोभित है। ऊपर दोनों सिरों पर नभचारी गन्धर्व है। उनके नीचे दोनों ओर एक खड्गासन और एक पद्मासन मूर्तियां विराजमान हैं। मूर्ति के दोनों किनारों पर अलंकरण है।

१३. सवा दो फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा है। सिर के पीछे भामण्डल सुशोभित है।

१४. सात फुट के एक शिलाफलक पर भगवान ऋषभदेव की खड्गासन मूर्ति है। उसके दोनों ओर चार खड्गासन मूर्तियां हैं। उनसे नीचे चमरवाहक चमर लिये हुए भगवान की सेवा में खड़े हैं। पादपीठ पर वृषभलांछन अंकित है।

१५. पांच फुट के शिलाफलक पर पद्मासन प्रतिमा उत्कीर्ण हैं। बायीं ओर ९ पद्मासन मूर्तियां बनी हुई हैं। दायीं ओर का भाग खण्डित है शिलाफलक भी टूटा हुआ है।

१६. भगवान अजितनाथ की खड्गासन प्रतिमा है। बायीं ओर तीन लघु खड्गासन मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। दूसरी ओर का भाग खंडित है। पादपीठ पर गज का लांछन अंकित हैं।

१७. पद्मासन तीर्थंकर प्रतिमा के ऊपर छत्र है। छत्र के ऊपर ३ पद्मासन प्रतिमाएँ हैं। दायीं और बायीं ओर २-२ पद्मासन और १-१ खड्गासन प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं।

१८. सर्वतोभद्रिका प्रतिमा। एक स्तम्भ में चारों दिशाओं में चार पद्मासन प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

१९. किसी मूर्ति का ऊपर का भाग, जिसमें केवल छत्र मध्य में और दो हाथी दोनों सिरों पर बने हुए हैं।

२०. एक पद्मासन प्रतिमा। सिर नहीं हैं।

२१. कक्ष नं. २० के सामने मैदान में एक पद्मासन तीर्थंकर मूर्ति रखी हुई है। उसके सिर के पीछे भामण्डल और सिर के ऊपर छत्रत्रयी है। दोनों पार्श्वों में दो पद्मासन प्रतिमाएँ बनी हुई हैं। उनसे नीचे चमरेन्द्र चमर लिये हुए खड़े हैं। मूर्ति पर भव्य अलंकरण किया हुआ है।

कुछ मूर्तियां ऐसी हैं, जो अन्य कक्षों में रखी हुई हैं। वे विवादास्पद कही जा सकती है उनमें से एक है तीर्थंकर माता की मूर्ति जो वदोह (विदिशा जिला) से प्राप्त हुई है। माता पर्यंक पर लेटी हुई हैं। उनके बगल में सद्यः जात बाल तीर्थंकर लेटे हुए हैं। तीर्थंकर माता के सिर के पीछे भामण्डल है। उनके निकट इन्द्र द्वारा माता की सेवा के लिए भेजी गई चार देवियां खड़ी हैं उनके हाथों में चमर आदि वस्तुएं है। किन्तु कोई विद्वान इसे देवकी और कृष्ण की मूर्ति मानते है।

शिलालेख : संग्रहालय में कुछ जैन शिलालेख भी है जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। एक शिलालेख उदयगिरि (जिला विदिशा) गुहा से उपलब्ध हुआ है जो गुप्त संवत १०६ (सन् ४२५ ई.) है। इसमें उल्लेख है कि कुरुदेश के शंकर स्वर्णकार ने कर्मारगण (स्वर्णकार संघ) के हित के लिए गुहा मन्दिर में तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा का निर्माण कराया।

एक यज्वपाल वंश के असल्लदेव (नरवर) का शिलालेख है जो विक्रम संवत १३१९ (सन् १२६२) का है। इसमें गोपगिरि दुर्ग के माथुर कायस्थ परिवार की वंशावली दी गई है। सर्वप्रथम भुवनपाल का नाम है जो धार-नरेश भोज का मंत्री था। उसने जैन तीर्थंकर के मंदिर का निर्माण कराया, नागदेव ने उसमें तीर्थंकर प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई और यह शिलालेख वास्तव्य कायस्थ (श्रीवास्तव) ने लिखा। उपरोक्त स्थापत्य एवं शिल्पकला की भव्यता के कारण गोपाचल कलाक्षेत्र की श्रेणी में अपना एक स्थान रखता है।

मोहम्मद गौस का मकबरा : उपरोक्त दुर्ग की मूर्तियों एवं मन्दिरों के अलावा ग्वालियर दुर्ग के पास बना हुआ एक मकबरा है। इस मकबरे का भी एक इतिहास है। ग्वालियर दुर्ग इब्राहीम लौदी के एक सूबेदार तातार खाँ के अधिकार में था। बाबर की सेना ने दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। किन्तु किले में कैसे प्रवेश किया जावे, यह समस्या थी। मुगल सेना ने किले के पास रहने वाले एक फकीर शेख मोहम्मद गौस की मदद ली। एक बरसाती रात में किले के प्रत्येक द्वार पर शेख ने अपने शिष्यों को किसी प्रकार नियुक्त कर दिया। आधी रात को सेना ने किले में प्रवेश किया और किले पर मुगलों का अधिकार हो गया। इस उपकार के कारण मुगल घराने में अकबर के समय तक इनका बड़ा सम्मान रहा। शेख ८० वर्ष की आयु में मरे। उनकी मृत्यु पर अकबर ने उनका भव्य स्मारक बनवाने की इच्छा व्यक्त की। स्मारक तुरन्त तैयार नहीं हो सकता था। अत: शेख के शव को एक भव्य भवन में जो अत्यंत कला पूर्ण था, दफना दिया गया। यह भवन जैन मंदिर था तथा इसमें भगवान् चंद्रप्रभ की मूर्ति विराजमान थी। बाबर के सैनिकों ने पहले ही उसकी वेदियाँ एवं मूर्तियाँ नष्ट कर दी थीं। उसी जैन मंदिर को अकबर ने शेख मोहम्मद गौस का मकबरा बना दिया।

मार्ग एवं स्थिति : ग्वालियर नगर मध्य रेलवे की मुख्य लाइन पर आगरा-झांसी के बीच में आगरा से ११८ कि. मी. और झांसी से ९७ कि. मी. दूर पर एक प्रसिद्ध शहर है। प्राचीन काल में अनेकों ऐतिहासिक घटनाएँ यहाँ घटित हुई हैं। दक्षिण भारत का द्वार होने के कारण इसको विशेष राजनैतिक महत्व मिल चुका है। जैन इतिहास, कला और पुरातत्व की दृष्टि से इसका गौरव पूर्ण स्थान रहा है।

यह शहर तीन भागों को मिलाकर बना है—ग्वालियर, लश्कर एवं मुरार। ग्वालियर पहाड़ी पर बने हुए किले के उत्तर में स्थित है, लश्कर किले के दक्षिण में, तथा मुरार किले के पूर्व में है। लश्कर सन् १८१० में दौलतराव सिंधिया के फौजी लश्कर या छावनी के रूप में बस गया और मुरार में पहले अंग्रेजों की छावनी थी। ग्वालियर से इंदौर होते हुए बम्बई तक, आगरा होते हुए दिल्ली तक और कानपुर होते हुए कलकत्ता तक पक्की

सड़कें हैं। ग्वालियर हवाई मार्ग पर भी हैं। एयर इण्डिया सर्विस दिल्ली बम्बई से जोड़ती है।

उपरोक्त मूर्तियों के अतिरिक्त उरवाई द्वार की बाहरी दक्षिण प्राचीर के पीछे कोटेश्वर में भी कुछ मूर्तियां बनी हुई हैं। एक मूर्ति ८ फुट लम्बी शिला पर बनी हुई है। यह तीर्थंकर माता की शयन मुद्रा में है। इस पर ओपदार पालिश है। एक शिला फलक में एक स्त्री पुरुष और बालक बने हुए हैं। संभवतया यह मूर्ति गोमेद यक्ष और अम्बिका की है।

गुहा मन्दिर : मध्य भारत में गुहा मन्दिर केवल दो ही स्थानों में हैं और दोनों ही स्थान भूतपूर्व ग्वालियर रियासत में है। एक तो विदिशा के पास उदयगिरी पहाड़ी, और दूसरा ग्वालियर का दुर्ग।

विदिशा के करीब ४-५ मील दूर उदयगिरि पहाड़ी में बीस गुहा मन्दिर हैं और वे सबके सब गुप्तकाल के हैं। पाषाण की दृष्टि से यह पहाड़ी गुफायें खोदने के लिये उपयुक्त न थी फिर भी यहाँ ऐसी अनेक मूर्तियों का निर्माण किया गया जो अद्वितीय हैं। इन गुफाओं में से पहली और बीसवीं गुफा में जैन मूर्तियां हैं। बीसवीं गुफा पहाड़ी के ऊपरी भाग में हैं। इसमें खुदे हुए लेख से ज्ञात होता है कि यहाँ पार्श्वनाथ मूर्ति का निर्माण किया गया था जो कुमार गुप्त प्रथम के राज्य काल में गुप्त संवत् १०६ में खोदा गया था।

गोपाचल दुर्ग गुहा मन्दिर : ग्वालियर किले में गुफा मन्दिर संख्या, विस्तार तथा मूर्तियों की ऊँचाई के कारण विशेष आकर्षण हैं। उक्त किला एक स्वतंत्र पहाड़ी पर है, वास्तव में किला और पहाड़ी अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही हैं। यह उत्तर-दक्षिण करीब २ मील लम्बा, पूर्व पश्चिम करीब आधा मील चौड़ा है एवं ३०० फीट ऊँचा है। १५वीं शताब्दी में तोमर राजाओं के राज्य काल में जैन धर्मावलम्बियों के प्रभाव के कारण समूची पहाड़ी पर ऊपर नीचे, चारों ओर गुफा मन्दिर खोद दिये गये और उनमें विशाल मूर्तियों का निर्माण किया गया। ये गुफा मन्दिर और मूर्तियां संख्या और विस्तार में सर्वाधिक हैं। अर्वाचीन होने के कारण एलोरा की गुफाओं के समान उनका स्थान नहीं है। इन गुफाओं में अनेक लेख मिले हैं जिनसे विदित होता है कि ये ३३ वर्षों (१४४१ से ~~१४७४ के बीच) में खोदी~~ जा सकी थीं।

वैर का विपाक

वाचक समरादित्य (प्रभासाचार्य गुरु ने ही समरादित्य मुनि को वाचक पद विभूषित किया था।) अयोध्या में पहुँचे तब की इनकी प्रवृत्ति का यहाँ संक्षेप में अवलोकन करें।

अयोध्या के राजा प्रसन्नचन्द्र को ज्यों ही सूचना मिली कि इस युग के एक आत्मनिष्ठ, दीप्तिमान वाचक समरादित्य बाहर उद्यान में पधारे हुए हैं तो वह तुरत उनके दर्शनों को वहाँ पहुँचा। प्रसन्नचन्द्र मानता था कि श्री ऋषभदेव भगवान प्रथम तीर्थंकर थे और पहले पहल धर्म का प्रवर्तन करने वाले भी वहीं थे। समरादित्य ने उसकी इस भूल का संशोधन कराया। पहले तो उन्होंने संक्षेप में कालगणना का स्पष्टीकरण किया। काल के आदि से धर्मचक्रवर्ती होते आए और होते रहेंगे, यह उसे समझाया। ऋषभदेव वर्तमान चौबीसी में प्रथम तीर्थंकर माने जाते हैं परन्तु वे अमुक काल की अपेक्षा से ही प्रथम तीर्थंकर हैं।

कालचक्र के आरे के साथ ही मनुष्य की शरीर रचना और क्रमिक क्षीणता विषयक अनेक बातें भी बताकर, प्रसन्नचंद्र की अपूर्ण समझ के अंधेरे पटल को उन्होंने शनैः शनैः दूर कर दिया।

कुछ ही समय बाद इंद्रशर्मा नामक ब्राह्मण उनके पास आया। वाचक समरादित्य ने जीव आठ प्रकार के कर्म कैसे बांधता है, यह सब उसे समझाया।

इंद्रशर्मा के साथ वार्तालाप पूरा होने ही पाया था कि चित्रांगद नामक एक जिज्ञासु ने कर्मबंध के ही अनुसंधान में उनकी स्थिति के विषय में विशिष्ट रूप से प्रश्न किया। वाचक समरादित्य ने उसकी शंका और जिज्ञासा का भी समाधान किया।

अपने दैनिक-पर्व दिवस के विधि-विधान और क्रियाकांड में भी वाचक समरादित्य उतने ही जागृत रहते थे। चर्चा में रस आए इसलिए दैनिक क्रिया भुला दी जाती हो ऐसा किसी को नहीं मान लेना चाहिये। क्रिया-कलाप में

से जो थोड़ा बहुत समय बचता था उसी को वे इस प्रकार शंका समाधान में सदुपयोग कर लिया करते थे। अपने आत्महित की अवगणना करनेवाला जनता के हित की साधना नहीं कर सकता है ऐसा वे वाणी से नहीं अपितु व्यवहार से समझाते रहते थे।

एक दिन दो युवकों ने उनसे विचित्र प्रश्न पूछे। एक ने पूछा: व्रत-संयम स्वयं ही जो दुःखदायक है उसमें से सुख की आशा कैसे की जा सकती है?

समरादित्य वाचक की गंभीर मुखमुद्रा पर स्पष्ट ही स्मित की रश्मि दौड़ गई। क्षण में ही उन्होंने उस युवक की ओर प्रमोद भाव से देखा और पूछा:

तुम रुग्ण हो जाते हो तब भी मिष्ठान्न ही खाते रहते होगे? क्यों यही सत्य है ना? रोगी को पथ्य का पालन करना पड़े क्या यह कम दुःखदायक नहीं है? क्या इस दुःख में से सुख का सर्जन नहीं होता है?

युवक नीचा मुंह किए देखता रहा। तप-संयम दुःखद लगे, फिर भी जैसे जैसे तपस्वी को संयमी को अपनी भीतरी अनंत शक्ति का और स्वरूप का भान होता है वैसे ही उसको यह भी मालूम होने लगता है कि एक सामान्य संयमी जितना सुखी तो महान् चमरबंध राजा भी नहीं होता है।

दूसरे युवक का प्रश्न था: हमसे आपकी तरह का पूरा पूरा संयम नहीं पाला जा सकता है। महाव्रतों की अपेक्षा हम अणुव्रत का पालन करें। इसका अर्थ तो यह हुआ कि आप जिस हिंसा असत्य आदि का आचरण नहीं कर सकते हो उसके आचरण की हमें छूट है।

प्रश्नकर्त्ता अपने प्रश्न की वक्रशैली को भली प्रकार समझ रहा था। वह तो मात्र वाचक का गांभीर्य ही माप रहा था। समरादित्य ने एकदम आग्रहपूर्वक उसके सामने हाथ का संकेत कर यह बता दिया कि अब अधिक बोलने की आवश्यकता नहीं है।

तुम कितने भाई हो? युवक को ऐसी गाढ़ पकड़ कि, जो वह कभी भूले ही नहीं, में लेने की दृष्टि से वाचक ने उससे प्रश्न किया।

हम चार भाई हैं।

अब मानों कि यहाँ का प्रसन्नचंद्र, राजा तुम चारों ही भाइयों को कैद कर ले

और तुम्हारा पिता जाकर राजा से प्रार्थना करे। उसके बहुत आग्रह करने पर राजा यह कहे कि मैं तुम्हारे एक पुत्र को छोड़ सकता हूँ, शेष तीन को तो मैं कारागार में ही रखूंगा। तुम्हारे पिता को तब ऐसा लगे कि कुछ भी हो एक पुत्र तो घर लौट आ रहा है, शेष के लिए फिर कोई अवसर पर प्रार्थना करूँगा। अब तुम कहते हो जैसे बाप ने एक पुत्र को मुक्त कर लिया और तीन को कारागर में रखने को मान गया वैसे ही महाव्रतों की अपेक्षा अणुव्रतों का पालन करना है। श्रेष्ठि युवक बात का मर्म समझ गया इतना ही नहीं अपितु समरादित्य पूर्वपक्ष को उसकी ही युक्ति से हरा देने की खूब शक्ति रखते हैं यह भी वह मान गया।

व्रत अधिक पाप करने की आज्ञा नहीं देते, मात्र एक मर्यादा वे बांध देते है और वह भी अनिवार्य होने से मर्यादा का आश्रय लेना पड़ता है। एक बार जो इस व्रत-तप-संयम का रसास्वाद ले लेता है वह इस मर्यादा में से निकल कर पाप-दुष्कर्म-हिंसा-असत्य परिग्रह मात्र को त्यागने का उद्यत रहता है। मुनि ने शांत भाव से मूलतत्व समझा दिया।

फिर अपने समय की मर्यादा पूरी हो जाने पर वाचक समरादित्य अयोध्या की भूमि से विहार कर उज्जयिनी की ओर प्रयाण कर गए। अयोध्यावासियों को समरादित्य मुनि की थोड़ी दिनों की यह स्थिरता एक दीर्घ सु-स्वप्न जैसी ही रह गई। समरादित्य मुनि अयोध्या के इतिहास में मानों एक सुवर्ण प्रकरण ही रच गए थे।

अयोध्या से. उज्जयिनी तक के प्रदेश को विराग के बादलों से रसपरिपूर्ण बनाते महामुनि समरादित्य उज्जयिनी के एक रमणीय उद्यान में ध्यानस्थ मुद्रा में रह रहे थे। तभी उज्जयिनी का ही एक जन वहाँ पहुँच गया। घटिका तक तो पाषाणप्रतिमा जैसे ध्यानस्थित पुरुष को अंधकार में भी वह अनिमेष दृष्टि से देखता रहा। क्षण के लिए उसकी मानवता के सूक्ष्म तार झनझना उठे। दोनों हाथ जोड़ने का उसका मन हुआ। देह को तुच्छ माननेवाला यह कोई तपस्वी ही होना चाहिए ऐसा उसे लगा। परन्तु थोड़ी देर बाद ही उसकी वृत्ति में भारी उल्कापात जग उठा हो ऐसा वह अस्वस्थ हो गया। यह कोई संत-साधु नहीं अपितु अवश्य ढोंगी होना चाहिए ऐसा उसने निश्चय कर

लिया। ध्यानी हो तो क्या घर में बैठकर ध्यान नहीं किया जा सकता था? दुनिया को ऐसा ढोंग बताने की क्या आवश्यकता थी? अवश्य ही यह कोई महा धूर्त दीखता है। इसने प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए ही यह ढोंग रचा है ऐसा लगता है। ऐसे रमणीय उद्यान में आकर खड़ा है यही बताता है कि मुनि का वेश पहरने वाला यह ढोंगी ध्यानी बगुला-भक्त है? ध्यान में स्थित मुनि को कैसे सताया जाय, ढोंगी का ढोंग कैसे खोला जाय, इसी का वह खड़ा-खड़ा विचार करने लगा। दूर खड़े रहकर पत्थर फेंकने से अथवा शरीर में काँटे चुभाने से तो सामान्य ही व्यथा पहुँच सकती है। ढोंगी के लिए यह पूरी-पूरी सजा नहीं कही जा सकती। तब मुझे क्या करना चाहिए? इसी प्रकार विचार करता हुआ वह मुनि के ठीक सामने ही बैठ गया।

वह थका हुआ भी दीखता था। बैठे रहने का मन होते हुए भी शांति से बैठा वह रह नहीं सकता था। न जाने कैसी उद्दाम वैरवृत्ति उसको हचमचा रही थी। कुछ देर फिर वह मुनि के मुख की ओर देखता रहा। चन्द्र के प्रकाश में उसने इन मुनि को पहचान ही लिया। वह मन ही मन बोल उठाः ओ हो। यह तो वही ढोंगी समरादित्य राजकुमार है, जिसने कि खूब धूमधाम से मोटे ठाठबाठ सहित दीक्षा ली थी। वही तो यह है। आवेश ही आवेश में वह एकदम खड़ा हो गया। हिंसक पशु का रक्तपिपासु उन्माद उसकी आँखों में विद्युत के समान चमक उठा। उसका काला और कुरूप देह रात्रि के अंधकार में और भी भयानक लगने लगा।

उद्यान का पुष्पराजी से महकता वातावरण उसको मानो चिढ़ाता हो वैसे ही वह वहाँ से भाग जाना चाहता था। तेज कदम रखता हुआ वह भागा परन्तु प्रयत्न करते हुए उसके कदम ही नहीं उठ रहे थे। तुरत ही उसे लगा कि इस ढोंगी मुनि ने ही अपने जादू-टोने की काली विद्या द्वारा उसे जकड़ दिया है। बस वह भारी उलझन में फंस गया।

कैसा मंत्र-प्रभाव है, इस धूर्त का। इस प्रकार खूब जोर से बड़बड़ाता पीठ फेरकर दौड़ने का वह प्रयत्न करता है। थोड़ी ही देर में वह फिर लौट आता है। इस समय इसके हाथ में गंदे वस्त्र के कुछ चींथड़े भी हैं।

इतना ही काफी होगा अपने मन को समझाता हो जैसे धीरे से बोलता हुआ वह मुनि के पास गया है। उसे फिर स्मरण हो जाता है कि यदि ये चीथड़े आग नहीं पकड़े तो ?

बस दौड़ता हुआ जाकर तेल से भरा एक मिट्टी का दिया और थोड़े से लाललाल अंगारे कहीं से वह ले आया। ईर्ष्या की जलन से पहले ही वह जल रहा था और अब धगधगाते अंगारे से वह और भी मानो जल रहा हो वैसा अकुलाने लगा। यदि इस समय यहाँ कोई पहुँच गया तो मुझे अधमुआ किए बिना वह नहीं मानेगा और नहीं छोड़ेगा इस भय से वह चारों ओर भयत्रस्त दृष्टि से देखने लगा।

फिर वह निष्कंप खड़े मुनि के देह के चारों ओर चींथड़े लपेटने लगा। इतने में उसे एक ओर से सुखे पत्तों की खड़खड़ाहट सुनाई दी। वह चींथड़े लपेटते लपेटते ही चौंक उठा। ध्यानस्थ मुनि के पीठ पीछे जा छुपा। किसी मनुष्य की आवजाव नहीं देख कर फिर से हिम्मत बांध अपना चींथड़े लपेटने का अधूरा काम पूरा करने में लग गया।

इस युवक को उज्जयिनी के लोभ गिरिसेन कहते थे। सारी उज्जयिनी को पूछने पर सभी यही एक स्वर में कहेंगे कि इस गिरिसेन जैसा इर्ष्यालु-घातकी मनुष्य पृथ्वी पर दूसरा कोई भी नहीं होगा। अंतर की इसकी कुत्सित वृत्ति ने, ईर्ष्या और हिंसा के अध्यव्यवसाय ने इसके ऊपर ऐसे कुरूप चित्र बना दिए थे कि देखते ही गिरिसेन एकदम कठोरक्रूर लगता था।

महामुनि समरादित्य ने कभी किसी दिन भी इसका अशुभ चिंतन नहीं किया। समरादित्य की पंक्ति से यह बहुत ही निम्नतर कक्षा का कहा जाना चाहिए फिर भी गिरिसेन समरादित्य के प्रति असाधारण वैर रख रहा था, निष्कारण ईर्ष्या से जल रहा था। आज इसको अवसर मिल ही गया। समरादित्य की दीक्षा महोत्सव देखकर इसको जो जलन हुई उसका बदला लेने को आज उसे ऐसा अवसर प्राप्त हो गया इसके लिए वह अपने को धन्य मानने को ललचा रहा था।

मुनि के देह को गंदे-फंदे चींथड़ों से लपेट देने के पश्चात् इसको विचार हुआ कि मेरी भूल हो गई। चींथड़े तेल में डुबोना तो रह ही गया। तेल भी थोड़ा ही था और चींथड़े बहुत थे। उसने फिर से चींथड़े तेल में भिगोकर मुनि के अंग में लपेट दिया और चोर के जैसे उनमें आग लगाकर वहाँ से वह एकदम भाग ही गया।

धुंधवाते चींथड़े अनुकूल वायु का उत्तेजन पाकर भड़भड़ा कर जल उठे। मुनि की देह को उनकी ज्वालाएं दझाने लगी। एक साथ ही सैकड़ों साँप मुनि के अंग पर स्वच्छंद लीला कर रहे हों ऐसा भयानक दृश्य वहाँ खड़ा हो गया।

अग्नि से जलते हुए भी मुनि के मुख से एक भी शब्द नहीं निकला। सामान्य मनुष्य जिस आग के सहज स्पर्श से ही चिल्ला उठता है, उस आग को चारों ओर उठते रहने पर भी यह मुनि इतनी शांति-स्वस्थता कैसे कायम रख सके होंगे? उनकी यह अडगता हिमाचल के साथ प्रतिद्वन्द्वता कर रही थी?

मुनिवर ने ध्यान में प्रवेश करने के पूर्व ही अपनी देह और देह के व्यापार का सर्वथा त्यागकर दिया था। वस्तुतः वह देह ही उनका नहीं रह गया था। देह के सुख-दुःख विषयक अपना संबंध ही उन्होंने छेद कर दिया था। देह जब आग से भड़ाभड़ चल रहा था, उस समय अपने पूर्व कर्म जलते हों, आत्मा का कंचन शुद्धतम बनता हो, ऐसी ही विचार श्रेणी पर वे आरुढ़ थे। अग्नि के इस उपद्रव को उन्होंने आत्मरमणता का अवतंत्ररूप मान लिया था।

समाप्त

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:
   Vol - 1 (satakas 1- 2) Price : Rs. 150.00
   Vol - 2 (satakas 3- 6) 150.00
   Vol - 3 (satakas 7- 8) 150.00
   Vol - 4 (satakas 9- 11) 150.00
2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates Price : Rs. 100.00
   (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism Price : Rs.
10. Smt. Lata Bothra- The Harmony Within Price : Rs. 100.00
11. Smt. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira Price : Rs. 100.00

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari BeganiPrice : Rs. 50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Dr. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Dr. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Dr. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Dr. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Dr. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 30530222, (Resi) 24543534

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

AMRITLAL & CO.
113B, Monohardas Katra
Ist floor, Kolkata - 700 007
Phone: (O) 2282-4649 (R) 2454-3534

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO
MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246, 30229372

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Susaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869 / 6476, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes

INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES

40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.

Freight & Chartering Brokers

12-B, N. S. Road; Kolkata - 1

PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-

STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS

13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

ABL INTERNATIONAL LTD.

1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.

Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN

"Mineral House"

27A, Camac Street, Kolkata - 700 016

Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663, Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER

147, M. G. Road

Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.

Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)

2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001

Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400

e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220 3142 (O) 2475 0995, 2476 1803 (R)
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

JAIN FOOD

NOW AT

GARDEN CAFE

CALL FOR PARTY ORDER - 2439 9346
8/1 Alipore Road, Kolkata - 700 027
Phone : 2439 9346, 2280 1582
Garden Cafe Take Away : Unnayan, Survey Park
(E. M. Bye Pass) Phone : 2418 8852

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK

45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025

(Near Jadu Babu's Bazar)

Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm

All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street. Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228. Fax : 2229 3882. 2245 7562
e-mail : info@subhash.com. website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street. 3rd floor. South Block. Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228. Registered Office: Subhash House. F-27/2 Okhla Industrial area. Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94. Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road. Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15. Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region. braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply. fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres. no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible. on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare. then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment. we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental. infrastructural. civil and power projects. The truth is we design. build. operate and maintain with equal skill. Moreover. we follow the foolproof Engineering. Procurement and Construction System. Simply put. we are a single point responsibility. A one stop shop.

So. next time. somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street

3rd floor, Block-A

Kolkata - 700 007

Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056

Fax : 2283 6643

Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXIX. No. 10 TITTHAYARA January 2006
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225